ईश्वर सिद्धान्त के रूप में सर्वेश्वरवाद (Pantheism) की समीक्षात्मक व्याख्या

विश्वास रखता है।

सर्वेश्वरवाद का उदाहरण पाश्चात्य दार्शनिक स्पीनोजा और फेकनर के दर्शनों में मिलता है।

स्पीनोजा:- सर्वेश्वरवाद के कट्टर समर्थक माने जाते हैं। इनके सर्वेश्वरवाद को परम्परागत सर्वेश्वरवाद कहा जाता है। इनके अनुसार मूल सत्ता ईश्वर या द्रव्य एक, असीम, स्वतन्त्र, स्वयंभू, व्यक्तित्वरहित, चिरन्तन, सर्वव्यापक तथा अनन्त धर्मों से युक्त है। ईश्वर या द्रव्य में अनेक गुण हैं किन्तु मानव अपूर्ण होने के कारण केवल दो ही गुणों को जान पाता है। ये गुण हैं विस्तार और विचार। विश्व के अन्दर जड़ और चेतन दो तरह के पदार्थ हैं। जड़ पदार्थ ईश्वर के विस्तार गुण के प्रकार या विकार हैं और चेतन विचार गुण के। विश्व इन्हीं प्रकारों की समष्टि है। अतः ईश्वर और विश्व समानार्थक हैं। दोनों में अभिन्न एवं अवियोज्य सम्बन्ध है। स्पीनोजा ईश्वर को व्यक्तित्वरहित मानते हैं क्योंकि इसमें कल्पना, इच्छा, संकल्प आदि का अभाव रहता है। अतः संसार में जो कुछ होता है वह ईश्वराधीन है।

फेकनर:- इनके सिद्धान्त को प्रत्ययवादी सर्वेश्वरवाद कहते हैं। इनके अनुसार जो सम्बन्ध आत्मा और शरीर में है, वही सम्बन्ध ईश्वर और विश्व में है। जिस प्रकार शरीर में आत्मा का निवास है उसी प्रकार विश्व में भी एक विश्वात्मा अर्थात ईश्वर का निवास रहता है। ईश्वर विश्व की आत्मा है और विश्व ईश्वर का शरीर। अतः ईश्वर को चेतन सत्ता मानने के कारण इनके सिद्धान्त को प्रत्ययवादी सर्वेश्वरवाद कहा जाता है।

सर्वेश्वरवाद रहस्यवाद की पुष्टि करता है।

भाग-4

रहस्यवाद एक ऐसा सिद्धान्त है जिसके अनुसार साधक अपने को इष्टदेव में विलीन कर देना चाहता है अर्थात उपासक और उपास्य के बीच कोई द्वैत नहीं रह पाता। सर्वेश्वरवाद भी यही करता है। ऐसे सम्पूर्ण विश्व को ईश्वरमय बना देता है।

सर्वेश्वरवाद का दृष्टिकोण वैज्ञानिक है। वैज्ञानिक युग को बौद्धिक युग कहा जाता है। बुद्धि का स्वभाव है कि वह अनेकता में एकता का दर्शन करना चाहती है। सर्वेश्वरवाद भी अनेकता की व्याख्या एकता के आधार पर करता है। इसके अनुसार परमसत्ता एक है और अनेकता इसी एक सत्ता का विकार है।

उपर्युक्त विवेचनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि सर्वेश्वरवाद भी दोषों से मुक्त नहीं है। अतः दार्शनिक एवं धार्मिक दृष्टि से निम्न दोष पाये जाते हैं।

(i) सर्वेश्वरवाद ईश्वर को विश्व का उपादान कारण मानता है। ईश्वर एक, असीम तथा सर्वव्यापी है। ठीक इसके विपरीत विश्व अनेक प्रकार के पदार्थों से युक्त ससीम तथा अंशव्यापी है। हम जानते हैं कि समान से समान की ही उत्पत्ति होती है किन्तु यहाँ समान से असमान की उत्पत्ति की बात समझ में नहीं आती। इस विषय पर स्पीनोजा और फेकनर दोनों चुप हो जाते हैं।

(ii) यहाँ ईश्वर विश्व व्यापी माना गया है। विश्व में शुभ-अशुभ एवं सुख-दुःख पाये जाते हैं। ईश्वर विश्व के अणु-अणु में व्याप्त होने के कारण सुख-दुःख, शुभ-अशुभ से ओतप्रोत हो जाते हैं।

(iii) इसके अनुसार ईश्वर व्यक्तित्वरहित है। इसमें क्षमा, दया, सहानुभूति आदि सद्गुणों का अभाव रहता है। धार्मिक भावना के विकास के लिए व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर का होना आवश्यक है अतः सर्वेश्वरवाद का ईश्वर